

शुल्क १५ वर्ष  
२१००/- रुपये

# विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये  
वार्षिक २५०/- रुपये

## तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३३ : नई दिल्ली : १८-२४ नवम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी १०२, सर्व १५६ जसोल में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। चतुर्मास परिसंपन्नता की ओर है। पूर्वघोषित के अनुसार पूज्यवर के चतुर्मास के पश्चात् २६ नवम्बर को जसोल से प्रस्थान कर बाड़मेर, बायतू, फलसूंड आदि क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए १८ जनवरी २०१३ को असाडा पधार जाएंगे। वहां वर्धमान महोत्सव के आयोजन के पश्चात् १ फरवरी २०१३ को टापरा में मंगल प्रवेश होगा। १४८वां मर्यादा महोत्सव वहां समायोज्य है। आचार्यप्रवर का टापरा तक का यात्रा पथ पूर्व में प्रकाशित किया जा चुका है। प्रस्तुत विज्ञप्ति में उसे पुनः प्रकाशित किया जा रहा है तथा टापरा के बाद बाव (अक्षय तृतीया) तक का यात्रा पथ भी इसी विज्ञप्ति में प्रकाशित है।

### आचार्य तुलसी के ६६वें जन्म दिवस के अवसर पर परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा समुच्चारित गीत

तेरापथनायक तुलसी गुरुवर का गुरु उपकार है।  
सुखशान्तिप्रदायक वदनानन्दन जन-मन आधार है।।

मानव-मानव में संयम का शुभ संस्कार जगाया।  
पतितों दलितों स्खलितों को भी अपने गले लगाया।।१।।

सम्प्रदाय है गौण धर्म की ध्वजा सदा लहराए।  
नर की नर से घृणा कभी-भी नहीं पनपने पाए।।२।।

लम्बी-लम्बी पदयात्रा कर जनसम्पर्क बढ़ाया।  
वत्सलता बरसा प्रभुवर ने गीत प्रेम का गाया।।३।।

जैनागमवाङ्मयसम्पादन-शोध बना श्रेयस्कर।  
शीतलता देता पाठक को ज्यों रजनी में शशधर।।४।।

बना अणुव्रत का आन्दोलन जनताहित क्षेमकर।  
'महाश्रमण' दुनिया में चमके ज्यों नभ में वर भास्कर।।५।।

लय - समता रा सागर.....।

## समझो पापों को-१६

आचार्य महाश्रमण

अठारह पापों में सोलहवां पाप है--रति-अरति। इसमें दो शब्द हैं--रति और अरति। रति का तात्पर्य है--रमण करना, अनुरक्त हो जाना, रुचि रखना और अरति का अर्थ है--अनुराग न रखना, रुचि न रखना, अरुचि रखना। असंयम में रति का होना और संयम में अरुचि या विकर्षण का होना रति-अरति पाप है। होना तो यह चाहिए कि संयम के प्रति आकर्षण हो और असंयम के प्रति अनाकर्षण हो। जितना-जितना आदमी के जीवन में संयम बढ़ता है, त्याग बढ़ता है, उससे धर्म की पुष्टि होती है और जितना जीवन में असंयम बढ़ता है, उससे अधर्म की वृद्धि होती है। गलत कार्यों का--त्याग करना धर्म है। भोग में लिप्त होना अधर्म है, पाप है।

परम पूज्य गुरुदेव तुलसी ने संयम का संदेश दिया था। उन्होंने कहा--'पूरा संयम ग्रहण नहीं कर सको तो अणुव्रतों को स्वीकार करो, कुछ अंशों में भी संयम को स्वीकार करो।' जैन हो या अजैन, नास्तिक हो या नास्तिक, संयम का प्रयोग सभी के लिए कल्याणकारी है। अणुव्रत स्वीकार करने के लिए कौनसी जाति और कौनसा धर्म, यह विवेचन अपेक्षित नहीं है। मैं तो यहां तक कहता हूं कि कोई नास्तिक आदमी भी अणुव्रतों को स्वीकार करना चाहे तो मैं उसके लिए भी अनुमोदना करना चाहूंगा। नास्तिक अणुव्रती बनेगा तो उसका भी कल्याण होगा। नास्तिक आदमी परलोक में विश्वास नहीं करता, किन्तु वर्तमान लोक तो सामने है। वह अणुव्रतों को स्वीकार करेगा तो यहां तो अच्छा जीवन जी पाएगा। इस जीवन में हम दूसरों के लिए कष्ट देने वाले, समस्या पैदा करने वाले तो न बनें। अच्छा जीवन जी सके, इसलिए नास्तिक आदमी के लिए भी संयम की स्वीकृति सुखद है, आनन्दप्रद है, शांतिप्रद है, कल्याणकारी है।

अनादि काल का संस्कार होता है, जिससे असंयम के प्रति आदमी का आकर्षण हो जाता है। वह इन्द्रियों का असंयम, मन का असंयम, वाणी का असंयम और शारीरिक असंयम करता है यानी आदमी असंयम में चला जाता है। अनेक लोग संयम की साधना भी करते हैं। छोटी अवस्था में अनेक साधु-साधवियां दीक्षित हो जाते हैं। परम पूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी जीवन के ग्यारहवें वर्ष में ही संत बन गए थे। लगभग आठ दशक का उनका संयमकाल, साधना काल रहा। जो भाग्यशाली होते हैं, हलुकर्मों होते हैं, जिनका क्षयोपशम प्रबल होता है, वे लोग संयम की साधना को प्राप्त करते हैं। सबके मन में संयम की भावना उत्पन्न नहीं होती। कुछ-कुछ व्यक्तियों में ही महाव्रतों और पूर्ण संयम को स्वीकार करने की भावना पैदा होती है। जिन लोगों के लिए साधु बनना संभव नहीं है, उन्हें कुछ अंशों में संयम को स्वीकारने का प्रयास करना चाहिए।

जैन वाङ्मय में श्रावक के बारहव्रतों का उल्लेख है। श्रावक बारहव्रतों को स्वीकार करें तो कुछ अंशों में संयम जीवन में आ जाएगा। कोई अजैन व्यक्ति भी अणुव्रतों को स्वीकार करे तो जीवन में संयम आ जाएगा। जीवन में यदि संयम का थोड़ा अंश भी आता है, तो वह भी कल्याणकारी होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया--'स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्' अर्थात् धर्म का थोड़ा अंश भी जीवन में आता है, तो वह आदमी को महान् भय से उबारने वाला होता है। गृहस्थ यह सोचे--'मैं हिंसा से कितना बच सकता हूं? जो अनावश्यक हिंसा है, जिसके बिना अच्छी तरह काम चल सकता है, उस हिंसा से बचने का प्रयास करूं। जमीकंद खाए बिना भी काम चल सकता है तो जमीकन्द को छोड़ने का नियम स्वीकार करूं। रात में बिना खाए मेरा काम चल सकता है तो रात्रिभोजन का त्याग करूं।' वह भी संयम की साधना होगी। साधु-साधवियों के लिए तो जीवनभर का रात्रिभोजन विरमण

व्रत होता है। रात्रि भोजन का त्याग है तो संयम की दिशा में प्रस्थान है। पेड़-पौधों को न काटने का संकल्प है, वह भी हिंसा से बचने का प्रयास है। इस प्रकार नाना रूपों में हिंसा का अल्पीकरण किया जा सकता है।

कषाय मन्दीकरण का अभ्यास करना चाहिए। व्यक्ति को यह संकल्प करना चाहिए कि मैं किसी को कटु जबान न कहूं, मैं किसी का अपमान न करूं, अवहेलना न करूं। यह भी संयम का प्रयोग है। गृहस्थ यह सोचे--'मैं यथासंभव झूठ का वर्जन करने का प्रयास करूं।' संकल्प हो, लक्ष्य हो कि मुझे झूठ से बचने का प्रयास करना है तो वह झूठ से काफी बच सकता है। जिसको झूठ से बचना हो, उसको बोलने का भी संयम करना चाहिए, ज्यादा नहीं बोलना चाहिए। ज्यादा बोलने से कभी-कभी अनजान में भी मुख से असत्य बात निकल सकती है। एक जगह कहा गया है कि सत्य का शत्रु है--वाचालता। जो वाचाल होता है कई बार उससे असत्य का प्रयोग हो सकता है। इसलिए आदमी को सत्य की साधना की दृष्टि से वाचालता से बचना चाहिए।

व्यक्ति को मौन का भी अभ्यास करना चाहिए। अनावश्यक नहीं बोलना सबसे अच्छा मौन है। अपेक्षावश शब्दों का प्रयोग करना होता है और अपेक्षा नहीं हो तो मौन रखना श्रेयस्कर होता है। व्यक्ति के मन में सच्चाई के प्रति रति हो जाए। अठारह पाप में जो रति अरति है, उसको उल्टा कर दिया जाये। असंयम में जो रति है, वह संयम में हो जाए, तो पाप की जगह धर्म हो जाएगा और संयम में जो अरति है, वह असंयम में हो जाए तो पाप की जगह धर्म हो जाएगा। व्यक्ति का सच्चाई के प्रति आकर्षण हो। यह आदमी की कमजोरी है कि वह भयवश झूठ बोल देता है, क्रोधवश झूठ बोल देता है, कभी लोभवश झूठ बोल देता है, कभी हंसी-मजाक में झूठ बोल देता है। व्यक्ति लक्ष्य बनाए कि सच्चाई के प्रति प्रेम हो जाए और झूठ से दुश्मनी हो जाए, घृणा हो जाए, अरति हो जाए। चोरी के प्रति घृणा हो जाए और अचौर्य के प्रति रति हो जाए, प्रेम हो जाए। यह संकल्प हो कि मैं चोरी की चीज नहीं लूंगा। किसी को ठगूंगा नहीं, धोखा नहीं दूंगा। कभी-कभी आदमी ठगने का प्रयास भी कर लेता है।

एक दुकानदार था। उसके कपड़े की दुकान थी। एक दिन रात को उसने सपने में देखा कि मैंने दुकान खोल ली है और गद्दी बिछाकर मैं बैठ गया हूं। एक गांव का आदमी आया और बोला--'सेठ साहब! मुझे लड़ा चाहिए। क्या मूल्य है?'

दुकानदार ने सोचा कि भोला पंछी आया है, इसे तो आराम से ठग सकता हूं। होशियार को ठगना तो मुश्किल होता है, भोले और भले को ठगना आसान होता है। वैसे तो मूल्य था दो रुपये एक मीटर, किन्तु दुकानदार ने बता दिया चार रुपये एक मीटर।

ग्रामीण बोला--'सेठ साहब! मूल्य तो ज्यादा है। इतना चुकाना गरीब आदमी के लिए मुश्किल होगा थोड़ा कम कर दो।'

सेठ ने कहा--'कपड़ा लेना हो तो लो वरना चले जाओ। बकवास के लिए मेरे पास समय नहीं है।'

ग्रामीण को कपड़ा लेना जरूरी था, लड़के की शादी सामने थी। उसने कहा--'ठीक है, सेठ साहब! पांच मीटर कपड़ा दे दीजिए, मैं जैसे-तैसे मूल्य चुकाऊंगा।'

सेठ ने नींद में ही कपड़ा हाथ में लिया और एक मीटर, दो मीटर, तीन मीटर, चार मीटर, पांच मीटर, यों कपड़े को मापा और फाड़ा। जब कपड़ा फटने की चर-चर आवाज आई, तब सेठ की नींद टूटी। ध्यान देने पर पता चला कि अपनी ही धोती हाथ में आ गई और उसी को फाड़ डाला।

बेईमानी से पैसा कमाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। आदमी ईमानदारी से हजार रुपया भी

कमाता है तो वह भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है और धोखा करके करोड़ भी कमा लेता है तो वह भी व्यर्थ है। शुद्ध कमाई महत्त्वपूर्ण होती है, अशुद्ध कमाई व्यर्थ है। आदमी को अशुद्ध साधनों से बचने का प्रयास करना चाहिए। इसी तरह शील के प्रति रति हो और अशील के प्रति घृणा हो। जैन वाङ्मय में कहा गया कि श्रावक स्वदार संतोष या स्वपति संतोष, इस व्रत की आराधना करें। गृहस्थ को परिग्रह चाहिए, क्योंकि गृहस्थ जीवन में प्रायः पैसे के बिना काम नहीं चलता। परन्तु पैसा भी किस तरीके से आता है और पैसे के प्रति मोह कितना है? इस पर भी ध्यान देना चाहिए। पैसे के प्रति ज्यादा मोह नहीं होना चाहिए। पैसे की सीमा कर लें कि अमुक तिथि के बाद इससे ज्यादा पैसा अपने पास नहीं रखूंगा, त्याग कर दें तो यह त्याग धर्म है और अपरिग्रह, इच्छा परिमाण की साधना है। यह संयम और साधना का एक प्रकार है। सामान्यतया लोग यह कहते हैं कि मैंने एक लाख का विसर्जन अमुक संस्था के लिए कर दिया। इसे विसर्जन नहीं कहना चाहिए, यह आपने अर्थ सहयोग किया है, यह सामाजिक सहयोग है। 'इतनी राशि से ज्यादा अमुक तिथि के बाद अपने पास नहीं रखूंगा' उसको भले इच्छा परिमाण कह दें, अपरिग्रह कह दें या किसी रूप में विसर्जन कह दें। वह एक धर्म का, संयम का प्रकार है। किसी संस्था अथवा व्यक्ति को दान दिया जाता है, उसे विसर्जन नहीं कहना चाहिए, उसे अर्थ सहयोग कहना, अनुदान कहना, चंदा कहना, ज्यादा उचित शब्द का प्रयोग हो सकता है। जिसका पैसे के प्रति मोह है, वह तो एक प्रकार से दरिद्र है। आचार्य भिक्षु साहित्य में एक दोहा आता है कि दरिद्र किसे कहा जाए?

**घर में धन पिण दलिद्री, जिको न देवे दान।**

**भारभूत धन तेहनो, कोरो करै गुमान।।**

घर में कोई वस्तु है, भोजन है, कपड़ा है, परन्तु साधु को देने की भावना नहीं है तो साधु के आने पर भी उसके हाथ से कुछ दान नहीं होता है, ऐसा आदमी दरिद्र है। उसका धन भारभूत होता है और वह केवल अहंकार करता है। आदमी में त्याग और अपरिग्रह की चेतना जागृत रहनी चाहिए। सांसारिक दृष्टि से दूसरों के हित में दान किया जाता है, वह सांसारिक या लौकिक अनुकम्पा की बात हो जाती है। व्यक्ति की अपरिग्रह के प्रति रति हो और परिग्रह के प्रति अरति की भावना हो तो धर्म की साधना हो जाती है। जो रति-अरति अठारहवां पाप है, उसको उल्टा कर दें तो वह धर्म हो जाता है।

हम संयम के प्रति आकर्षण बढ़ाने का प्रयास करें, भोग से त्याग की ओर आगे बढ़ें, राग से विराग की ओर आगे बढ़ें, मनोरंजन से आत्मरंजन की ओर आगे बढ़ें, अज्ञान से ज्ञान की ओर आगे बढ़ें। हमारी अभिमुखता कल्याण की ओर हो जाए। जो अच्छाइयां हैं, विशेषताएं हैं, हमें उन्हें आत्मसात् करने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में संयम बढ़ेगा तो वह मात्र इस जीवन के लिए ही नहीं, आगे के लिए भी कल्याणकारी है, आत्मा के लिए कल्याणकारी है। हम पापों को छोड़ने का या पापों को कम करने का प्रयास करें और धर्म को समृद्ध करने का, पुष्ट करने का अभ्यास करें। आदमी में संकल्प का बल जाग जाता है तो आदमी क्या नहीं कर सकता।

सेनापति घर में आया। वह उदास, निराश होकर बैठ गया।

उसकी पत्नी ने पूछा--'आज इतने उदास क्यों हो? क्या बात है?' सेनापति बोला मेरी सेना हारने के कगार पर है, इसलिए मैं उदास हो गया हूँ।

महिला ने सेनापति में मनोबल बढ़ाने का प्रयास किया। वह भी उदास हो गई। सेनापति ने पूछा--'तुम उदास क्यों हो?'

पत्नी ने कहा--‘मेरे पति का संकल्प बल कमजोर पड़ गया, इसलिए मैं उदास हो गई।’ थोड़ी प्रेरणा मिली और सेनापति का सुप्त संकल्प और साहस का बल जाग उठा, वह युद्ध के प्रांगण में गया। सेना का मनोबल बढ़ाया और हारती-हारती सेना विजेत्री बन गई। यह संकल्प का बल अध्यात्म की दिशा में बढ़ जाता है तो हम आत्मा के समरांगण में भी विजय को प्राप्त हो सकते हैं, अपनी साधना को आगे बढ़ा सकते हैं।”

•

## परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण जसोल में

### दुरुपयोग न करें इन्द्रियों का

**७ नवम्बर।** प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--‘काम-भोग क्षणिक सुख देने वाले होते हैं, किन्तु उनका परिणाम दुःख देने वाला होता है। काम-भोग मानो अनर्थों की खान है। संसार में एक से पांच इन्द्रिय वाले प्राणी होते हैं। प्राणी इन्द्रियों के माध्यम से शब्द, रूप, गंध आदि का ज्ञान करते हैं। इसलिए ये ज्ञानेन्द्रियां हैं। इन इन्द्रियों से भोग भी होता है, अतः ये भोगेन्द्रियां भी हैं। इन्द्रियों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। अच्छे प्रवचन, गुरुवाणी आदि, भक्ति गीतों का श्रवण कानों का सदुपयोग है। सदुपदेश सुनकर व्यक्ति कल्याण की ओर अग्रसर हो सकता है। सत्साहित्य के पठन, संतदर्शन आदि के द्वारा आंखों का सदुपयोग करना चाहिए। अनिमेष प्रेक्षा, नासाग्र पर ध्यान आदि भी आंखों का सदुपयोग है। इन्द्रियों का उपयोग करते हुए व्यक्ति को राग-द्वेष मुक्त रहने का प्रयास करना चाहिए। इन्द्रिय संयम की साधना श्रेयस्कर होती है। सवेन्द्रिय संयम मुद्रा का प्रयोग इन्द्रिय संयम की साधना में सहायक बन सकता है। साधक इन्द्रिय संयम की साधना करता हुआ इन्द्रिय विजय की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करे।’

कार्यक्रम में मुम्बई से समागत श्री रवि जैन ने गीत का संगान किया। साध्वी कमलप्रभाजी ने अपने संयम पर्याय के पचास वर्षों की परिपूर्णता के अवसर पर अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए आचार्यवर से आशीर्वाद की याचना की। मुनि जितेन्द्रकुमारजी और साध्वी योगप्रभाजी ने इस संदर्भ में भावाभिव्यक्ति दी।

परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--‘साध्वी कमलप्रभाजी के संयम पर्याय की आधी शताब्दी पूर्ण हो गई। इन्होंने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के पास दीक्षा ली थी। अच्छा काम करने वाली साध्वीजी हैं। खूब अच्छा काम करती रहीं, अच्छा विकास करती रहीं। इनकी सहदीक्षित साध्वी कंचनप्रभाजी, साध्वी रविप्रभाजी और साध्वी ललितप्रभाजी अभी यहां नहीं हैं। हम यहां बैठे-बैठे उनके लिए भी मंगलकामना करते हैं कि वे भी खूब साधना का विकास करें, शासन की प्रभावना करती रहीं।’

### सामंजस्य में बाधक हैं स्वार्थ और दुराग्रह

**८ नवम्बर।** परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आज तेरापंथ महिला मंडल, जसोल द्वारा कन्या सुरक्षा व सामंजस्य कार्यशाला का समायोजन हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि जिनेशकुमारजी ने इस संदर्भ में विचार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--‘आत्मा अमूर्त है, उसे आंखों से नहीं देखा जा सकता। वह साधना के द्वारा ही गम्य है। जिस व्यक्ति का चित्त राग-द्वेष रूपी तरंगों से तरंगित नहीं होता, वही आत्मदर्शन कर सकता है। आत्मा अमूर्त है, विराट भी है। एक आत्मा संपूर्ण लोकाकाश

में फैल सकती है। आत्मा को इन्द्रियों के द्वारा देखना, छूना, सूंघना आदि संभव नहीं है। उसका साक्षात्कार करने लिए राग-द्वेष मुक्ति की साधना आवश्यक है।'

कन्या सुरक्षा व सामंजस्य कार्यशाला को संबोधित करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--'कन्या भ्रूण हत्या की बात पिछले कुछ अर्से से यदा-कदा कर्णगोचर होती रहती है। मां-पिता परिस्थितियों के कारण ऐसा घिनौना कृत्य करने के लिए विवश हो जाते होंगे। किन्तु अहिंसा की दृष्टि से विचार करें तो यह कितना बड़ा हिंसा का कार्य है। मां ममता की मूर्ति कहलाती है। उसके द्वारा भी चाहे अनचाहे ऐसा कृत्य हो जाता है। ऐसा घिनौना कृत्य नहीं होना चाहिए। मैं तो गुरुधारणा करने वालों को यह नियम करवाता हूँ कि भ्रूणहत्या को प्रश्रय नहीं देंगे। गुरुधारणा में अनेक नियम ऐसे हैं जो व्यक्ति के जीवन को काफी अच्छा और व्यवस्थित रख सकते हैं।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'परिवार में अनेक व्यक्ति प्रायः साथ रहते हैं। दो अथवा उससे अधिक व्यक्तियों को साथ रहना होता है तो सामंजस्य बिठाने का प्रयास वांछनीय होता है। दरवाजे को चौखट में बिठाने हेतु पहले सामंजस्य बनाना होता है। उसी प्रकार सामूहिक जीवन में सामंजस्य की आवश्यकता होती है। संयुक्त परिवार का होना न होना महत्वपूर्ण बात नहीं है, महत्वपूर्ण है पारस्परिक सामंजस्य का होना। स्वार्थ और दुराग्रह हावी हो जाता है तो पारस्परिक सामंजस्य कैसे रह सकता है। परिवारिक सामंजस्य बनाए रखने के लिए स्वार्थ और दुराग्रह का त्याग अपेक्षित होता है। एक-दूसरे का हित का चिन्तन रहना चाहिए। सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहीं-कहीं बड़ों को झुकना भी पड़ सकता है।'

एक दिवसीय कन्या सुरक्षा एवं सामंजस्य कार्यशाला में जसोल और पार्श्ववर्ती क्षेत्रों की २३५ कन्याएं और युवतियां संभागी बनीं। संभागियों को पूज्यवर के पावन संबोध के अतिरिक्त मुनि जिनेशकुमारजी, समणी अक्षयप्रज्ञाजी, समणी जिनप्रज्ञाजी और न्यायाधीश श्री गौतम चोरड़िया से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

### सजग प्रहरी बनें

**६ नवम्बर।** परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में कहा--'रात्रियां व्यतीत हो रही हैं और दिन भी बीत रहे हैं। यह काल का प्रवाह है, जो शाश्वत है और अविराम चल रहा है। इसे रोका नहीं जा सकता। ज्यों-ज्यों काल व्यतीत होता है, व्यक्ति की पर्याय का भी परिवर्तन होता जाता है। समय के साथ बच्चा जवान होता और युवक वार्धक्य को प्राप्त हो जाता है। एक आत्मा एक योनि से दूसरी योनि में चली जाती है। व्यक्ति यह चिन्तन करे कि समय निरन्तर व्यतीत हो रहा है। मैं इसका सत्कार्यों में सदुपयोग करूँ।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'जो मानव जागरूक रहता है, वह समय का लाभ उठा सकता है। धर्म करने वाला जीवन को सफल बना सकता है। मानव जीवन को व्यर्थ गंवाना मूर्खता होती है। जो समय का लाभ नहीं उठाता, उसे बाद में पश्चात्ताप करना पड़ सकता है। हम समय का उपयोग आत्मकल्याण और परकल्याण के लिए करें। जिस प्रकार पहरेदार जागरूकता के साथ पहरेदारी करता है, उसी प्रकार हम समय के सजग प्रहरी बनें। समय का सदुपयोग कर जीवन को सार्थक और सुफल बनाएं।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में पुद्गलासक्ति से बचने की प्रेरणा दी। साध्वी सरस्वतीजी ने अपने भावपूर्ण उद्गार व्यक्त किए।

### पूज्य सन्निधि में रूस के तैंतीस व्यक्ति

७ नवम्बर को रूस से ३३ व्यक्ति परम पूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंचे। उनके लिए त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का समायोजन किया गया। कार्यशाला में परम पावन आचार्यवर ने संभागियों

की विविध विषयक जिज्ञासाओं को समाहित किया। शासनश्री मुनि किशनलालजी और मुनि कुमारश्रमण ने प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण दिया। उल्लेखनीय है कि गलिना पिचुगीना के नेतृत्व में प्रतिवर्ष इस प्रकार का दल पूज्यवर की पावन सन्निधि में पहुंचकर प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करता है।

### त्रिदिवसीय ज्ञानशाला ज्ञानार्थी शिविर का समायोजन

**१० नवम्बर।** आज प्रातः तेरापंथ किशोर मंडल, जसोल द्वारा आतिशबाजी के विरोध में पर्यावरण रैली का समायोजन हुआ। रैली तेरापंथ भवन में परम पूज्य आचार्यवर की मंगल सन्निधि में पहुंचकर परिसंपन्न हुई। आचार्यवर ने संभागियों को संबोधित करते हुए संयमयुक्त जीवन जीने का संबोध प्रदान किया और इस वर्ष आतिशबाजी न करने का संकल्प कराया। किशोर मंडल द्वारा इस संकल्प के २४४ फार्म भरवाए गए।

आज से परम श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, जसोल और तेरापंथी सभा, जसोल के तत्त्वावधान में सिवांची मालाणी स्तरीय त्रिदिवसीय ज्ञानशाला ज्ञानार्थी शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में जसोल ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने 'अहं वन्दना' का संगान किया। पचपदरा ज्ञानशाला के बच्चों ने 'एकता' नामक परिसंवाद प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा, जसोल के मंत्री श्री सम्पतराजजी चौपड़ा ने शिविर के संदर्भ में भावाभिव्यक्ति दी। मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में धार्मिक उत्साह को उत्तरोत्तर प्रवर्द्धमान रखने की प्रेरणा दी।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'बालावस्था विकास करने की अवस्था होती है। इस अवस्था में विद्यालयी शिक्षा के साथ-साथ नैतिक आध्यात्मिक शिक्षा भी अपेक्षित होती है। ज्ञानशाला ज्ञानार्जन व व्यक्तित्व विकास का एक अच्छा माध्यम है। इसके माध्यम से बच्चों में सुसंस्कार भरने का प्रयास किया जा रहा है। जैन तत्त्व विद्या का प्रारंभिक ज्ञान भी इसके माध्यम से मिल सकता है। तेरापंथ धर्मसंघ से सम्बद्ध बच्चों का अहोभाग्य है कि उन्हें ज्ञानशाला जैसा उपक्रम प्राप्त है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के अनेक अवदानों में ज्ञानशाला एक महत्त्वपूर्ण अवदान है। छोटे गांवों, कस्बों के साथ नगरों महानगरों में भी बच्चों में ज्ञानशाला के प्रति आकर्षण देखने को मिल रहा है। इसके संचालन आदि में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद्, तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ कन्यामण्डल के कार्यकर्ता अपनी सेवाएं भी देते हैं। अभिभावक भी अपने बच्चों को ज्ञानशाला में भेजकर उनमें सत्संस्कारों को परिपुष्ट बनाने का प्रयास कर रहे हैं। बच्चों में नैतिक, आध्यात्मिक ज्ञान व विनयशीलता के संस्कारों का आना अपने आप में एक उपलब्धि होती है।'

त्रिदिवसीय ज्ञानशाला ज्ञानार्थी शिविर में सिवांची मालाणी के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग २७५ ज्ञानार्थी संभागी बने। ज्ञानार्थियों का पूज्यवर से मंगल पाथेय संप्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनि महावीरकुमारजी, मुनि नयकुमारजी, समणी विनयप्रज्ञाजी, समणी श्रेयसप्रज्ञाजी, समणी गौतमप्रज्ञाजी तथा समणी मध्यस्थप्रज्ञाजी से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ।

### सत्पुरुषार्थ है कल्याणमित्र

**११ नवम्बर।** प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने 'मूल्य पुरुषार्थ का' विषय पर मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'मनुष्य का कल्याणमित्र है सत् पुरुषार्थ। आत्मा हमारी मित्र है और आत्मा ही हमारी शत्रु हैं। सत्पुरुषार्थ में निरत आत्मा मित्र है जबकि दुष्पुरुषार्थ करने वाली आत्मा शत्रु है। भाग्यवाद का भी अपना सिद्धान्त है। भाग्य के बल पर व्यक्ति को बहुत कुछ मिल जाता है, पर मात्र



भाग्य भरोसे बैठना भी समीचीन नहीं है। वे व्यक्ति अभागे माने जाते हैं जो केवल भाग्य के आधार पर बैठे रहते हैं, पुरुषार्थ में संलीन नहीं होते हैं। भाग्य की चिन्ता न करके हम सत्पुरुषार्थ में संलग्न बने रहें।'

सत्पुरुषार्थ की अभिप्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'हम अपनी चेतना को निर्मल बनाने व आत्म उत्थान की दिशा में पुरुषार्थ करें। व्यक्ति उद्यमशील बने। यदि पुरुषार्थ सम्यग् है तो उसे अच्छा फल मिलेगा। यदि पुरुषार्थ असत् है तो उसे खराब फल मिलेगा। आचार्य तुलसी ने कितना पुरुषार्थ किया। उनके जीवन में पुरुषार्थ का दर्शन होता है। उन्होंने अपने जीवन में प्रलंब यात्राएं की। आचार्य भिक्षु ने लोगों को समझाने में सत्पुरुषार्थ किया। उन्होंने कितना साहित्य सृजन किया। एक सशक्त संगठन का जन्म उनके द्वारा हुआ।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'हमारे जीवन का एक मंत्र है सत्पुरुषार्थ। पुरुषार्थ से व्यक्ति सफलता का वरण करता है। भाग्य की आत्मा भी पुरुषार्थ ही है। लोग देवी-देवताओं की आराधना करते हैं किन्तु हम सत्पुरुषार्थ देवी की आराधना करें। हमारा मन पवित्र विचारयुत बने। हमारा व्यवहार पावन बने। यदि आचार, विचार एवं व्यवहार पवित्र है तो यह मानना चाहिए कि पुरुषार्थ का देव जाग रहा है। हमारा संकल्पबल मजबूत हो और हमारा पुरुषार्थ सही दिशा में चलता रहे।'

श्रीमती आरती भंसाली व खुशबू भंसाली द्वारा लिखित पुस्तक 'सातों सुख' श्री चैनरूप भंसाली व उनके परिजनों ने पूज्यप्रवर को भेंट की। श्रावक श्री फतेहचन्द भंसाली के जीवनवृत्त के साथ इस पुस्तक में सातों सुखों की व्याख्या की गई है। पुस्तक के संदर्भ में लेखिका आरती भंसाली, यशस भंसाली, श्री मुरली कांठेड़, डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने अपने विचार रखे।

पूज्य आचार्यवर ने इस संदर्भ में कहा--'सातों सुख' पुस्तक में फतेहचन्दजी भंसाली के बारे में तथा अन्य जानकारियां दी गई हैं, ऐसा ज्ञात हुआ है। एक बात मुझे लगी कि फतेहचैनजी जैसा कोई दूसरा व्यक्ति मेरी स्मृति में नहीं आ रहा है जो तीन पीढ़ियों से इस रूप में सेवा कर रहा हो। गुरुदेव तुलसी, गुरुदेव महाप्रज्ञ के समय देखा ये उनके पास बैठे सेवा करते रहते। आज भी यही स्थिति है। रात्रि में भी दो-तीन बजे आकर बैठ जाते हैं, सामायिक ले लेते हैं। तीन पीढ़ियों से की जा रही इनकी सेवा को अद्वितीय व उदाहरणीय कह सकता हूं। ये कोई गरीब घर के तो हैं नहीं, अच्छे घराने के हैं और एक सामान्य आदमी की तरह बैठे रहते हैं। इनके पुत्र चैनरूपजी ने भी चिन्तन मन्थन में अपने ढंग से सेवा की है। प्रस्तुत पुस्तक से पाठकों को अच्छी प्रेरणा मिले।' कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

### बड़ी दीक्षा का आयोजन

**१२ नवम्बर।** प्रातःकालीन कार्यक्रम में ५ नवम्बर को दीक्षित सतरह साधु-साध्वियों की छेदोपस्थानीय चारित्र ग्रहण एवं चार समणियों के उपसम्पदा स्वीकरण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। नवदीक्षित पांच मुनियों में मुनि धवलकुमारजी, मुनि प्रतीककुमारजी, मुनि रम्यकुमारजी ने अपने-अपने वक्तव्य, मुनि पुनीतकुमारजी ने कविता व मुनि ध्रुवकुमारजी ने गीत के माध्यम से अपनी सात दिवसीय संयम यात्रा के अनुभूत भाव प्रकट किए। समणी भास्करप्रज्ञाजी के वक्तव्य के बाद चारों समणीजी ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। नवदीक्षित बारह साध्वियों ने परिसंवाद व गीत के माध्यम से रोचक प्रस्तुति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आगम वाणी का समुच्चारण करते हुए नवदीक्षित साधु-साध्वियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र (बड़ी दीक्षा) प्रदान किया। इसी तरह समणियों को उपसंपदा प्रदान की। इसके बाद बड़ी दीक्षा प्राप्त साधु-साध्वियों तथा समणियों ने विधिवत् गुरु वंदना की।



परम पूज्य आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--‘दुनिया में सुख और दुःख दोनों चलते हैं। ऐसा आदमी कौन मिलेगा जिसने जीवन में बीमारी आदि को बिल्कुल नहीं भोगा हो। बाह्य एवं आंतरिक रूप में दो प्रकार के सुख होते हैं। पदार्थ एवं बाह्य परिस्थिति से मिल लेने वाला बाह्य सुख है, जबकि साधना से निष्पन्न आंतरिक सुख होता है। कर्मोदय से भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है और कर्म क्षय से आध्यात्मिक सुख मिलता है। कर्म बंधन के हेतुभूत कारक तत्त्व हैं राग और द्वेष। इन्हें प्रतनु करने की साधना आध्यात्मिक साधना है।’

आज संपन्न हुई बड़ी दीक्षा के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--‘नवदीक्षित साधु-साधवियों को छेदोपस्थापनीय चारित्र या बड़ी दीक्षा दी गई। यह विस्तृत त्याग का क्रम है। नवदीक्षितों को प्रेरणा प्रदान करते हुए पूज्यप्रवर ने कहा--‘तुम्हें साधना का सुअवसर प्राप्त हुआ है, इसलिए साधना में संलीन रहना है। इसी तरह समणियां भी अपने दिलो दिमाग में यह भावना रखे कि हमें साधना में आगे बढ़ना है। इसके लिए कषाय मंदता की साधना करनी होगी।’

साधनामय जीवन विकास हेतु अनाकर्षण, विनय, सरलता, सेवा, मृदुता, क्षमा इन छह सूत्रों की विशद व्याख्या एवं जीवन व्यवहार में अवतरण की प्रक्रिया के संदर्भ में तारण तिरण जहाज आचार्यवर ने मार्गदर्शन प्रदान करते हुए कहा--‘विनयता का विकास करें। बड़ों के साथ विनयपूर्ण व्यवहार करें और उच्चस्तरीय भाषा का प्रयोग करें। रत्नाधिक साधु-साधवियां कुछ कहे, चाहे वह मनोनुकूल न भी हो, फिर भी ‘तहत् महाराज’ बोलें।’ गुरु के पास विनय पूर्वक बैठना चाहिए, चंचलता नहीं करनी चाहिए। गुरु के पास रहने से अप्रमाद की साधना पुष्ट होती है। गुरु के वचन को श्रद्धा के साथ स्वीकार करना चाहिए। गुरु वचनों के अनुसार काम करें और आचरण करें। सभी अपने जीवन में क्षमा को धारण करें। वाणी में कटुता नहीं आए। यह ध्यान रहे कि कटुता विष है और मधुरता अमृत है। मृदुतापूर्ण व्यवहार रहना चाहिए। बच्चे की भांति सरल बनना चाहिए। वृद्ध, ग्लान आदि की सेवा करें। नवदीक्षित साधु-साधवियां एवं समणियां अपने जीवन में खूब विकास करें, खूब साधना करें।’ आचार्यवर ने प्रसंगवश दीपावली के अवसर पर आतिशबाजी से बचने का आह्वान किया। आचार्यवर की प्रेरणा का जनमानस पर गहरा प्रभाव परिलक्षित हुआ।

### हमारे भीतर समुद्रघाटित हो ज्ञान का प्रकाश

**१३ नवम्बर।** नशामुक्त जसोल अभियान के अंतर्गत अमरपुरा क्षेत्र में स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय प्रांगण में करीब चार सौ लोगों की उपस्थिति में आचार्यवर ने जीवन में संयम के अवतरण व नशामुक्त जीवन जीने का आह्वान किया। आचार्यवर की प्रेरणा से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने शराब, धुम्रपान, तंबाकू आदि को छोड़ने का संकल्प किया। प्रधानाध्यापक व छबीस स्कूलों के नोडल अधिकारी श्री लधाराम ने स्वागत भाषण किया। आचार्यवर के प्रवचन के पूर्व व पश्चात् मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी के वक्तव्य हुए। मास्टर ईश्वरसिंहजी, श्री भूपत कोठारी, पूर्व सरपंच श्री भंवर भंसाली, श्री सफरू खां, सभा के अध्यक्ष श्री खूबचन्द भंसाली के प्रासंगिक भाषण हुए।

वीतराग समवसरण में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--‘ज्ञातपुत्र श्रमण भगवान महावीर लोक में उत्तम हैं। वे वीतराग सर्वज्ञ महापुरुष थे। भगवान महावीर का परिनिर्वाण दिवस है। समस्त कर्मों से मुक्त होकर उन्होंने मोक्षश्री का वरण किया और वह महासूर्य अदृश्य हो गया। उस संदर्भ में दीप जलाए गए। बाह्य प्रकाश का अपना महत्त्व है। हमारे भीतर ज्ञान का प्रकाश समुद्रघाटित एवं समुन्नत हो, यह अपेक्षित है। दीपावली ज्योति पर्व के रूप में प्रतिष्ठित है। इस पर्व का संबंध भगवान महावीर से है तो भगवान राम से भी इसका संबंध

माना जाता है। आतिशबाजी से भी प्रकाश होता है, किन्तु उसकी उपयोगिता पर विचार किया जाना आवश्यक है। इस बार जसोल व अन्य क्षेत्रों के लोगों ने आतिशबाजी न करने का संकल्प व्यक्त किया है।'

आज अमावस्या के साथ चतुर्दशी होने से आचार्यवर ने हाजरी का भी वाचन करते हुए आचार्य भिक्षु को ज्योति पुरुष बताया और पांच महाव्रत, पांच समिति व तीन गुप्ति की विस्तृत व्याख्या करते हुए कहा—'आचार के प्रति व धर्मसंघ की व्यवस्था के प्रति प्रत्येक साधु-साध्वी जागरूक रहे और साधना निरंतर प्रवर्धमान रहे।

बालमुनि विवेककुमारजी, मुनि रम्यकुमारजी और मुनि ध्रुवकुमारजी ने लेखपत्र का समुच्चारण किया आचार्यवर ने अनुग्रह करते हुए प्रथम बार लेखपत्र उच्चारित करने वाले मुनि रम्यकुमारजी व मुनि ध्रुवकुमारजी को पांच-पांच कल्याणक व पूर्व में लेखपत्र उच्चारित कर चुके मुनि विवेककुमारजी को दो कल्याणक बख्शीश किए। तत्पश्चात् संतों ने दीक्षा क्रम व साध्वियों ने खड़े होकर लेखपत्र का वाचन किया। साध्वी शारदाश्रीजी, साध्वी विवेकश्रीजी, साध्वी अनुशासनश्रीजी, साध्वी जयप्रभाजी ने 'दीवाली रो दिन बड़ो' गीत प्रस्तुत किया।

## पूज्यप्रवर का संभावित यात्रा पथ

### जसोल से टापरा

२६ नवम्बर	नाकोड़ा	२१ दिसम्बर	बाटाडू
३० नवम्बर	जसोल	२२ दिसम्बर	भीमड़ा
१ दिसम्बर	तिलवाड़ा	२३ दिसम्बर	हुण्डो की ढाणी
२ दिसम्बर	बागुंडी	२४ दिसम्बर	छीतर
३ दिसम्बर	खारापार	२५ दिसम्बर	कवास
४ दिसम्बर	सणतरा	२६ दिसम्बर	उत्तरलाई
५ दिसम्बर	उत्तरणी	२७ दिस.से १ जन.	बाडमेर
६ दिसम्बर	गीडा	२ जनवरी	उत्तरलाई
७ दिसम्बर	सोहड़ा	३ जनवरी	कवास
८ दिसम्बर	हीरा की ढाणी	४ जनवरी	भगाणियों की ढाणी
९-१२ दिसम्बर	फलसूंड	५-१० जन.	बायतू
१३ दिसम्बर	पारासर	११ जनवरी	माधासर
१४ दिसम्बर	कसुम्बला	१२ जनवरी	दूधवा मल्लीनाथ
१५ दिसम्बर	लालू सियाड़ की ढाणी	१३ जनवरी	बागुण्डी
१६ दिसम्बर	सवाऊ पदमसिंह	१४ जनवरी	खेड़
१७ दिसम्बर	कानोड़	१५-१६ जन.	बालोतरा
१८ दिसम्बर	शहर	१७ जनवरी	सिवांची मालाणी भवन
१९ दिसम्बर	खींपर	१८-३१ जनवरी	असाढ़ा
२० दिसम्बर	झाक	१-१७ फरवरी	टापरा

## टापरा से बाव

१८ फरवरी	कालवडी	२५ मार्च	वोंध
१९ फरवरी	लोहीडा	२६ मार्च	भचाउ
२० फरवरी	सीणधरी	२७ मार्च	सीकरा
२१ फरवरी	पांयला	२८ मार्च	बुढार मोरा
२२ फरवरी	भाटाडा	२९ मार्च	कोटडा
२३ फरवरी	धांधलावास	३० मार्च	कनैबे
२४ फरवरी	गुडामालानी	३१ मार्च	धाणेटी
२५ फरवरी	पीपराला सीयालों का डेर	१ अप्रैल	पध्दर
२६ फरवरी	गांधव	२ अप्रैल	वर्धमान नगर
२७ फरवरी	सेवाडा	३ से ७ अप्रैल	भुज
२८ फरवरी	धमाणा गोलीया	८ अप्रैल	माधापर
१ मार्च	सांचोर	९ अप्रैल	कुकमा
२ मार्च	बावरला	१० अप्रैल	रतनाल
३ मार्च	दांतीया	११ अप्रैल	सापेडा
४ मार्च	दर्ईप	१२ अप्रैल	अंजार
५ मार्च	मावसरी	१३ से १६ अप्रैल	गांधीधाम
६ मार्च	चन्दनगढ़	१७ अप्रैल	सी.एस.एस. टर्मिनल
७ मार्च	लोद्राणी	१८ अप्रैल	नंदगांव
८ मार्च	आसारा	१९ अप्रैल	भचाउ गुरुकुल
९ मार्च	भरडवा	२० अप्रैल	कुंजीसर
१० मार्च	सूइगाम	२१ अप्रैल	खारोई
११ मार्च	बोरू	२२ अप्रैल	नया ककरवा
१२ मार्च	जजाम	२३ अप्रैल	रामवाव
१३ मार्च	डालडी	२४ अप्रैल	त्रम्बो जुना
१४ मार्च	सीघाड़ा	२५ अप्रैल	रापर
१५ मार्च	सांतलपुर	२६ अप्रैल	सेलारी
१६ मार्च	रोजु	२७ अप्रैल	संग्रामसर
१७ मार्च	पीपराला	२८ अप्रैल	फतेहगढ़
१८ मार्च	आडेसर	२९ अप्रैल	मौडा
१९ मार्च	पलासवा	३० अप्रैल	आडेसर
२० मार्च	गागोदर	१ मई	पीपराला
२१ मार्च	शीकागो टाउन	२ मई	रोजु
२२ मार्च	चीत्रोड	३ मई	सांतलपुर
२३ मार्च	लाकडीया	४ मई	सीघाड़ा
२४ मार्च	सामख्यारी	५ मई	कोरडा

६ मई	जन्डाला	१० मई	वासरडा
७ मई	इन्द्रवा	११ मई	माडका
८ मई	भाभर	१२ से १४ मई	बाव
९ मई	नेशडी		

**नोट :- यात्रा पथ में अपेक्षानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।**

### आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. श्री सम्पतमलजी दूगड़ (सरदारशहर-अहमदाबाद) की पुण्य स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मीदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू आनन्द-अलका, सुपौत्र युग, सुपौत्री छवि दूगड़ द्वारा प्रदत्त।

३१००/- स्व.श्री जसकरणजी-मनोहरीदेवी दूगड़ (तारानगर) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र बाबूलाल, सुपौत्र बिमल, राजेन्द्र, अशोक, प्रपौत्र आनन्द, मोहित, प्रवेश, शुभम, संस्कार दूगड़ कोलकाता द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती बदामबाई धाकड़ (धर्मपत्नी स्व. हरकलालजी धाकड़ सिसोदा-मुम्बई) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र हितेश, दिनेश, महावीर, गौतम, राजेश, भरत तथा सुपौत्र वंश व सुपौत्री हिरल, निधि ध्रुवी धाकड़ द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती केशरदेवी बरड़िया (धर्मपत्नी स्व. अमरचन्दजी बरड़िया) की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र पदमचन्द, बिमलचन्द, अशोककुमार, राजेन्द्रकुमार, निर्मलकुमार, विनोदकुमार बरड़िया जोबनेर-जयपुर द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री जंवरीमलजी सेखानी (बीदासर-हैदराबाद) के प्रभावक संधारे के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र मदनलाल, रणजीतमल, लक्ष्मीपत, सुपौत्र पीयूष, चिराग, सुपौत्री ज्योति सेखानी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री सरूपचन्दजी छाजेड़ (कुरहापानका-भुसावल) के ७५वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में उनकी सुपुत्री कल्पना-महेन्द्रकुमारजी गटागट (लातुर), कविता-राकेशजी नाहर (रायपुर-छतीसगढ़) दौहित्र उमेश-प्रेक्षा, दौहित्री समता-सुदीप, पूजा, रजत, रश्मि द्वारा प्रदत्त।

### दीक्षा आदेश

**१४ नवम्बर।** परम पावन आचार्यप्रवर ने ३ अप्रैल २०१३ को भुज में दीक्षा समारोह करने की घोषणा की है तथा उस समारोह में मुमुक्षु ख्याति (फतेहगढ़) को दीक्षित करने की घोषणा भी की है।

### पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

**केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति,**

**पो. जसोल-३४४०२४ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८९, ६३५२४०४६४९**

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४९ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

